Indian Streams Research Journal
Vol.1,Issue.V/June; 12pp.1-4
डॉ . भीमसिंग के राठोड
ISSN:-2230-7850

Research Papers

भूमंडलीकरण में अनुवाद और अनुवाद की समस्याएँ

डॉ . भीमसिंग के राठोड
अध्यापक
प्लाट नं 11 सर्वु नं . 40
पूजा कॉलनी कुसनूर रोड़
गुलवर्गा .

प्रस्तावना :—

एक भाषा की किसी सामग्री दूसरी भाषा में रूपांतर ही अनुवाद कहलाता है | इस तरह अनुवाद कार्य है एक ह्यस्त्रोतह भाषा में युक्त विचारों को दूसरी ह्यलक्ष्यह भाषा में व्यक्त करना होता है किन्तु यह व्यक्त करना बहुत सरल कार्य नहीं है | समस्या यह होती है कि हर भाषा विशिष्ट परिवेश पनपती है | अत ः उसकी अपनी ही अनेक ध्वन्यात्मक शाब्दिक रूपात्मक वाक्यात्मक आर्थिक मुहावरे विषयक था लोकोक्तिविषयक आदि अपनी विशेषताएँ होती है | जो अनेक भाषाओं से कुछ या काफी अलग होती है | इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि स्त्रोत भाषा की किसी अभिव्यक्त शब्दतः और अर्थतः लक्ष्य भाषा में हो | वास्तविकता यह है कि दोनों भाषाओं में इस प्रकार के तालमेल की समानता हमेशा होती ही नहीं | फिर उसे खोज पाने का प्रश्न ही नहीं उठता |

अपवादों को छोड़ दे तो प्रायः स्त्रोत ह्यभाष कीह सामगी और उनके अनुवाद स्वरूप प्राप्त लक्ष्य ह्यभाषा मेंह सामग्री ये दोनों अभिव्यक्ति तथा अर्थ के स्तर पर प्रायः एक या समान नहीं होती | अनुवाद में दोनों की समानता एक समझौता मात्र है | वे केवल एकदूसरे के मात्र निकट होती है | हॉ समनता की यह निकटता जितनी अधिक होती है अनुवाद उतना ही अच्छा और सफल होता है |

उदाहरण के लिए हिन्दी के तीन वाक्य लेंलड़का गिरा लड़का गिर पड़ा लड़का गिर गया | गहराई से देखें तो इन तीनों वाक्यों के अर्थ में सूक्ष्म अंतर है | मूल और अनुवाद को पूर्णतया एक या समान ही माना जा सकता इसी तरह मान ले किसी उर्दू नाटक में एक स्थानपर आता है आइए दूसरे स्थान पर आता है आ जाइए दूसरे स्थान पर आता है आ जाइए तीसरे स्थानपर आता है तशरीफ लाइएं और चौथे स्थान पर आता है तशरीफ ले आइए इसीतरह हिन्दी में लड़का गिर पड़ा या लड़का गिर गया का टहए boy felt या टहए boy fall down रूप में अंग्रजी में अनुवाद अर्थ और अभिव्यक्ति की दृष्टि से केवल निकट का ही माना जाएगा | यह कहने का आशय यह है कि अनुवादक को अनुवाद करते समय इस बात से बहुत सतर्क रहना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में अनुवाद उसकी सहज प्रकृति के सर्वदा अनुरूप हो स्त्रोत भाषा की किसी भी रूप में छाया न हो |

अनुवाद की समस्याएँ :-

एक कहावत हैं सुंदर स्त्रियॉ वफादार नहीं होती और वफादार स्त्रियॉ सुंदर नही होती | प्रारंभिक पुनरूत्थान के कई लेखकों का अनुवाद के बारे में ठीक इसी प्रकार का विचार था | अनुवाद यदि सुंदर होगा तो मूलनिष्ठ नहीं होगा और मूका निष्ठ होगा तो सुंदर नहीं होगा | अनुवाद के संबंध में कही गई यह बात चाहे कितनी भी अटपटी क्यों न लगे कुछ अपवादों की बात छोड़ दी जाए तो बहुत बड़ी सीमा तक यह एक सूक्ष्मात्मक ही कहीं जाएगी |

वस्तुतः होता यह है कि हम एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते है किन्तु हर भाषा अपने सांस्कृतिक परिवेश से संयुक्त रहती है और शायद ही कोई दो भाषाएँ ऐसी हो जिनका सांस्कृतिक परिवेश पूर्णतया एक होना चाहिए | इस सांस्कृतिक विभिन्नता का परिणाम यह होता है कि किन्हीं भी भाषाओं में न तो सभी प्रकार का वैचारिक साम्य होता है और न अभिव्यक्ति | यही कारम है कि अनुवाद यदि मूल सामगी में व्यक्त विचार को यथावत्अनुवाद में उतारना चाहता है तो अनुदित सामग्री की अभिव्यक्ति सुंदर नहीं हो पाती और यदि अभिव्यक्ति को सुंदर बनाने का यल करत है तो मूल विचार ठीक से नहीं आ पाते | इस तरह अनुवाद में वैचारिक मूल निष्ठता और अभिव्यक्तिक सुंदरता में सर्वदा अपेक्षित तालमेल बैठ पाना काफी कठिनअसाध्यप्राय कार्य है |

गणितात्मकता या सूचनात्मक के अनुवाद में तो उपर्युक्त कठिनाइयॉ प्रायः बहुत काम आती है क्योंकि उनमें अभिव्यक्ति पक्ष या शैली बहुत महत्वपूर्ण नहीं होती | किन्तु काव्यानुवाद में ऐसी कठिनाइयॉ बहुत बढ जाती है क्योंकि काव्य में भाव और अभिव्यक्ति दोनों ही इकाईयॉ आपस में इतनी अनुस्यूत होती है कि एक की तनिक भी क्षति हुई तो दूसरी भी क्षतिग्रस्त हुए बिना नहीं रह पाती | वस्तुतः रचनात्मक साहित्य के जो सर्वोत्तम अनुवाद मिलते भी हैं वे हर दृष्टि से समझौता मात्र होते है | इसके विपरीत यदि कोई अनुवादक रचना की रचनात्मकता की पूरी रक्षा करना ही चाहे तो उसे मूल को अपनी दृष्टि से ढालना पड़ता है | यह तो सर्वविदित तथ्य है

कि अनुवाद में अनेक समस्याएँ होती हैंयद्यपि सामान्य प्रकृति के अनुवाद की सामान्य समस्याएँ होती है |

साहित्यिक अनुवाद :-

जब हम साहित्यिक अनुवाद की बात करते हैं तो उस समय हमारा आशय साहित्य की समस्त विधाओं से होता है | गद्य साहित्य में नाटकों का अपना विशिष्ट स्थान है | प्राचीन काव्यशास्त्र के आचार्य नाटक को पाँचवा वेद मानते थे वस्तुतः नाटक अभिनय होने के कारम मंचीय ह्यमंचन योग्यह होते थे अतः नाटक का आनंद तीन प्रकार से लिया जाता है -

1 . पढकर **2** . देखकर और **3** . सुनकर

प्राचीन काले के नाटकों के संबोधनों का अंग्रजी रूप तो मिलेगा ही नहीं 'हे आर्य पुत्र' शब्द के लिए क्या अनुवाद मिलेगा ऋ यह स्वतःस्पष्ट है इसी प्रकार स्वामी नाथ प्राणनाथ प्रियमत जैसे संबोधनों का अनुवाद क्या होगा ऋ काव्यानुवाद के लिए अनुवाद को साहित्य का रस का आनंद लेनेवाला हृदय चाहिए व काव्य सृजन की अप्रतिम प्रतिभा भी चाहिए | यदि ने दोनों तत्व विद्यमान हो तो काव्य का अनुवाद भी निश्चित रूप से अच्छा ही होगा | कविता का अनुवाद करना वहुत के अनुवाद हुए है |

कविताओं के वहुत कम ही अनुवाद मूल का पूरी तरह कथ्य और कथन शैली दोनों दृष्टियों से प्रतिनिधित्व करते है किन्तु हम यह कव कहते है कि मूल कविता और उसका अनुवाद दोनों एक हैं या दोनों में अभिव्यक्ति और कथ्य की दृष्टी से कोई अंतर नहीं है | अंतर तो होता ही है |

अनुवादक यदि अच्छा अनुवाद करना चाहता हैं मूल के साथ अन्याय न हो तो उसे किसी कवि की कविताओं से केवल कुछ अपनी रूचि और अनुभूति के अनुकूल चुन लेनी चाहिए और उन्हीं का अनुवाद करना चाहिए |

गद्यानुवाद का अनुवाद काव्यानुवाद की अपेक्षा सरल है क्योंकि काव्यानुसार के विपरीत निम्नांकित बातें गद्यानुवाद के पक्ष में आ जाती है -

1 . हर अनुवादक छंद में अनुवादक नहीं कर सकता | छंदानुवाद सहज प्रतिभा श्रम तथा अभ्यास के विना संभव नहीं |

2 . पद्य में छंद तक गति आदि के बंधन होते हैं अतः ानुवाद कोमूल के समीप नहीं रखा जा सकता | जैर्सेकहीं कोई शब्द छोड़ दिया हाया है तो कई शब्द जोड़ दिया गया है और कहीं कुछ परिवर्तन करके संक्षेप या विस्तार कर दिया गया है |

3 . कविता में शब्दों का चयन होता है छंदानुवाद मूल के चयन को ला पाना कठिन होता है इसीलिए छंदानुवाद सटीक नहीं हो पाता |

नाटक के अनुवाद के लिए सवसे आवश्यक शर्त है कि उसे रंगमंच का ज्ञान होना चाहिए | मूल नाटक की मंच परम्परा का तथा जिस भाषा मे अनुवाद किया जा रहा है उसकी मंच परम्परा का नाटक के संवाद अभिनय से संवंध होते है | अतः अनुवादक को मूल संवाद ही नहीं देखना चाहिए वल्कि मूल में संवाद और अभिनय मे जिस तालमेल की संभावना है अनुवाद में भी वह लाने का यत्न हो सकता है |

अनुवादक की यह वंचकता अनुवाद को कभीकभी मूल से काफी अलग खींच ले जाती है | एक वार अनुवाद की इस विडंवना या इस वंचकता की सीमा देखने के लिए शांतिप्रिय द्विवेदी के कुछ सुंदर अंशो का अंग्रेज़ी फ्रांसीसी जर्मन रूसी तमिल चीनी तथा जपानी में अनुवाद करवाया गया तथा फिर इन भाषाओं से इन्हें कुछ अन्य अनुवादोकों द्वारा हिन्दी में लाया गया |

किन्तु इस सव वुराईयों एवं कठिनाईयों के वावजूद अनुवाद अनेक दृष्टियों से विश्व को एक सूत्र में वॉधे हुए है | उसके सहारे ही भिन्न भार्षाभाषी न केवल कंधे से कंधा मिलाकर विश्व को आगे वढा रहा है अपितु रक दुसरे के सुखःदुख को अपना मानकर तादात्मय का भी अनुभव कर रहे है | अतः सारी विडम्वनाओं के वावजूद अनुवाद आज युग की अनिवार्य आवश्यता वन चुकी है और उसे लाख गाली देकर भी हम उससे पीछे नहीं छुड़ा सकते |

सहाय्यक ग्रंथ सूची :-

1 . अर्जुन चव्हाण ः अनुवाद चिंतन
2 . सुरेशकुमार अनुवाद सिध्दान्त की रूपरेखा
3 . भोलानाथ तिवारी ः अनुवाद विज्ञान किताव घर प्रकाशन
4 . अर्जुन चव्हाण ः अनुवाद समस्याएँ एवं समाधान अमन प्रकाशन |